ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-५३
दिनांक- मंगलवार, १९ जुलाई, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 35.3 एवं 26.4 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 85 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 57 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.2 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 6.8 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 11.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 31.9 एवं दोपहर में 43.3 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(20–24 जुलाई, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 20–24 जुलाई, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अगले २४–४८ घंटों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। हलाकि तराई के कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा होने की सम्भावना है। पूर्वानुमानित अवधि में तराई के क्षेत्र में (पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण) छोड़कर बाकी क्षेत्रों में अच्छी वर्षा की सम्भावना नहीं है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक रहने का अनुमान है। यह 34 से 36 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है, जबकि न्यूनतम तापमान 25 से 27 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 12 से 18 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है।

• समसामयिक सुझाव

- पिछले कई दिनों से उच्च तापमान तथा अनावृष्ट्रि के कारण वाष्पण की प्रक्रिया में तेजी आई है। ऐसी स्थिति में खड़ी फसलों जैसे रोपी गयी धान में जीवनरक्षक सिंचाई करें। हल्दी, ओल एवं गन्ना की फसल में भूमि में नमी की कमी को देखते हुए अविलम्ब सिंचाई करें।
- मानसून के कमजोर रहने की संभावना को देखते हुए जिन किसानों के पास सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है एवं विचड़ा तैयार हो,वें नीची जमीन में धान की रोपनी करें।
- अभी ऊचांस एवं मध्यम जमीन में धान की रोपनी नहीं करें। इसके बदले तिल (कृष्णा), मक्का (सुवान) + उरद (पंत यू 31) को अपनाना चाहिये। जिन क्षेत्रों में सिंचाई के अभाव में गेहूँ की बुआई नहीं की जाती है, उसमें खरीफ, अरहर की किस्मों जैसे– बहार, राजेन्द्र अरहर–1, नरेन्द्र अरहर–1, मालवीय–13 किसान लगा सकते है। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का व्यवहार सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश तथा अगात किस्मों के लिए 25 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का व्यवहार करें।
- तिल की बुआई यथाषीघ्र समाप्त कर लें। कृष्णा, काँके सफेद, कालिका और प्रगति तिल की अनुशंसित किस्में हैं। बीज दर 4 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर तथा कतार से कतार एवं पौध से पौध की दूरी 30 से0मी0 x 10 से0मी0 रखें। 2.0 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित कर बुआई करे।
- ऊचास जमीन में खरीफ मूंग एवं उरद की बुआई करें। खेत की जुताई में 20 किलो ग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटाष तथा 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए एच0यू0एम0–16 तथा उरद के लिए पंत उरद–19, पंत उरद–31, नवीन एवं उत्तरा किस्में बुआई के लिए अनुषंसित हैं। बुआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेन्डाजीम 2.5 ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से शोधित करें। बुआई के ठीक पहले शोधित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करें। बीजदर 20–25 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी 30X10 से0मी0 रखें।
- मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काषी अनमोल तथा संकर किस्में अर्का श्वेता, अर्का मेघना, अर्का हरिता, काषी सुर्ख, काषी अगेती, काषी तेज अनुषंसित है। उन्नत किस्मों के लिए बीज दर 1 से 1.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा 200 से 300 ग्राम संकर किस्मों के लिए रखें। क्यारियों की चौड़ाई एक मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार 3–4 मीटर रखें। बीज को गिराने से पूर्व थायरम 75 प्रतिषत दवा से बीजोपचार करें।
- आम के पौधों की उम्र (10 वर्ष से अधिक) के अनुसार फलन समाप्त होने के बाद अनुषंसित उर्वरको जैसे 15–20 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद, 1.25 किलोग्राम नेत्रजन, 300–400 ग्राम फॉसफोरस, 1.0 किलोग्राम पोटाष, 50 ग्राम बोरेक्स तथा 15–20 ग्राम थाइमेट प्रति पौधा प्रति वर्ष के अनुसार उपयोग करें। जिससे अगले वर्ष पौधे फलन में आ सकें तथा उनका श्वास्थ अच्छा बना रहें।
- केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ–1 अनुषंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुषंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दूरी 2.1 मीटर है एवं बौनी जातियों में 1.5 मीटर रखें।
- लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देषी, शाही, अर्ली वेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट बेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्वर्णरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि हैं। उपजाऊ मिट्टी में 10X10 मीटर की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।

आज का अधिकतम तापमानः 34.4 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.1 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 26.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.6 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी